

142, 10. प्रमर्ता रथं दाम्प्रुष उपाक उच्यन्ता गिरो यदि च त्मना भूत् 178, 3. भवो नो हूतो अंध्रस्य विद्वात्त्मना देवेषु विविदे मितहुः 7, 7, 1. ये न्स्त्मना शितिनो वर्धयन्ति 87, 7. ते याम्ना धृषदिनस्त्मना पान्ति शश्रतः 5, 52, 2. अस्य कृषिषस्त्मना यज्ञ समस्य तन्वा भव vs. 6, 11. वर्नस्पते ऽव मज्ञा रराणाः । त्मना देवेभ्यो अग्निर्देव्यं शमिता स्वदयतु AV. 5, 27, 11. auch sogar, auch: अश्रयस्य त्मना रथस्य पुष्टेर्नित्यस्य रायः पतयः स्याम RV. 4, 41, 10. स वीरे धेते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सकृन्नपोषिणाम् 8, 92, 3. — 2) es legt den Nachdruck auf ein vorangehendes, seltener auf ein nachfolgendes Wort: विश्वं त्मना विभ्रतो यद्द नाम RV. 1, 188, 1. विश्वेषा त्मना शोभिष्ठम् 8, 3, 21. 10, 113, 3. उडु स्रियाः पर्वतस्य त्मनाज्ञत् 68, 7. समीची उरसा त्मना VS. 11, 31. So auch in Verb. mit चिद्: यो म इमं चिद्दु त्मनामन्दृच्चित्रं दावने RV. 8, 46, 27. त्वं त्या चिद्वातस्याश्वागो मृश्या त्मना वरुधये 10, 22, 5. Oefters als Stütze von praep. vor dem verb.: अत्र त्मना धृषता शम्बरे भिनत् 1, 34, 4. 7, 18, 20. अत्र त्मना मृजतं पिन्वतं धियः 1, 131, 6. 104, 3. अत्रमृजनुप त्मना देवान्यन्ति वनस्पते 142, 11. परि त्मना मितहुरेति क्वातामिः 4, 6, 5. प्र वा घृतावी वाह्वेर्दधाना परि त्मना विषु-द्रया त्रिगाति 7, 84, 1. 5, 13, 4. beim Verbum selbst: अर्मर्त्याः कशया चोदत् त्मना 1, 168, 4, 5. त्वं पूषा विंध्यतः पांसि नु त्मना 2, 1, 6. मृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना 2, 32, 4. 23, 2. 5, 10, 4. 25, 8. 52, 6. 8. 87, 4. कृदियेन दाम्प्रुषे पचकृति त्मना 4, 53, 1. तिस्रो दिवः पृथिवीस्तिस्र इन्वति त्रिभिर्नैर्भिर्नो रत्तति त्मना 5. 10, 170, 1. 176, 3. TS. 2, 1, 11, 2. यतिव पत्म्त्मना किनेत RV. 7, 34, 5. प्र ये दिवः पृथिव्या न वर्हणा त्मना रिर्चि अन्ध्र सूर्यः 10, 77, 3. — 3) besondere Verbindungen sind: a) उत त्मना, त्मना च und auch; und gewiss: नयो रात्रनुत् त्मनामे वस्तोःकृतोषसः (रत्तो दृक्) bei Nacht und auch in der Dämmerung und Morgens RV. 1, 79, 6. स रत्वं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमुत् त्मना । अचक्रे गच्छत्यस्तुतः 41, 6. त्वं यंविष्ठ दाम्प्रुषो नः पारुहि मृणुधी गिरः । रत्ता तोकमुत् त्मना schütze die Männer — schütze dazu auch ihre Kinder 8, 73, 3. 5, 8, 9. स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्त्वना च ये मधवानो नुनन्ति 7, 20, 10. कर्दो अय म्कानो देवानामवो वृणे । त्मना च दस्मवर्षसाम् 8, 83, 8. — b) इव त्मना, न त्मना gerade wie: रात्रसि त्वं पार्थिवस्य पशुया इव त्मना RV. 1, 144, 6. 10, 142, 2. समुवांसि-मिव त्मनाग्निमित्वा त्रिरोहितम् 3, 9, 5. VĀLAKH. 1, 4. RV. 8, 92, 2. 10, 64, 6. मदा अर्षति रघुना इव त्मना 9, 86, 1. अत्रस्या न त्मना वाजयन्तः 2, 19, 7. — c) अथ त्मना und gar, und zwar: अत्र तस्य बलं तिर म्क्रीव यौर-रय त्मना RV. 10, 133, 5. जग्भमा हरश्चादिशं श्लोकमद्देर्य त्मना 1, 139, 10. त्मन्या adv. so v. a. त्मना; diese Form ist nur in dem an Vanaspati gerichteten Verse einiger Āpri-Lieder gebraucht. उप त्मन्या व-नस्पते पाथो देवेभ्यः मृज । अग्निर्देव्यानि सिषदत् RV. 1, 188, 10 (vgl. अत्र-मृजनुप त्मना देवान्यन्ति वनस्पते 142, 11 und AV. 5, 27, 11). उपाव मृज त्मन्या समञ्जद्वाना पाथ ऋतुथा कृवीषि 10, 110, 10. वनस्पतिरवसृष्टो न पाथैस्त्वन्या समञ्जं क्मिता न देवः (स्वदाति यज्ञम्) VS. 20, 45. अथो वृतेन त्मन्या समञ्ज उप देवा ऋतुशः पाथ एतु 29, 10. त्मूत (partic. von तीव्र, wenn त्यूत zu lesen wäre) mit Fett getränkt: स्यात्यो यावत्तमूतं समोप्य Comm. zu TS. p. 343, 6. 11. त्य Pronominal-Stamm, der ganz wie 1. त declinirt wird; der nom. sg. m. und f. wird von स्य (s. d.) gebildet. Die Annahme, dass त्य das demonstr. (त) und relat. (य) in sich vereinige, ist allgemein. Im RV. häufig gebraucht. Die Grammatiker führen त्यद् (nom. acc. sg. neutr.) als

Thema auf Uṅādis. 1, 121. gaṇa सर्वादि zu P. 1, 1, 27. Vor. 3, 9, 56. 163. 165. Jener, insbes. jener bekannte; öfters abgeschwächt zum Artikel. त्वं त्यत्पणीनां विदे वसु RV. 9, 111, 2. निर्माया उ त्ये असुरा अभूवन् च मा वरुणा कामयासे 10, 124, 5. त्यम् वो अत्ररुणां गृणीषे 6, 44, 4. उप त्या वङ्को गमतः 7, 73, 4. क्वत् त्यानि नो सख्या क्भूवुः 88, 7. 3, 30, 3. त्वं कृ त्यदिन्द्र विश्वमाज्ञा 6, 20, 13. कुरु त्या कुरु नु श्रुता दिवि देवा नासत्या 5, 74, 2. त्यमंकु आ रथं यम् — 8, 22, 10. 10, 3. क्वत् त्यदिन्द्रावरुणा यशो वा येन — 3, 63, 1. भद्रं भलं त्यस्या अभूयत्या उदरमामयत् 10, 86, 23. 2, 22, 4. 6, 63, 2. त्या instr. f. 10, 75, 6. Hervorgehoben durch चिद्: त्यं चि-त्पर्वतं गिरिम् 8, 53, 5. 2, 30, 8. 5, 32, 4. 5. 6, 2, 9. 10, 143, 1. Beliebt ist die Stellung nach उत am Anfange eines Verses: उत त्यं भुङ्गुम् 7, 68, 7. उत त्ये देवो 2, 31, 5. उत त्या यज्ञता कृरी 4, 13, 8. Gehäuft neben andern demonstr.: एते त्ये भान्वो दर्शतायाः 7, 73, 3. 104, 20. एतत्त्यतं इन्द्रियमचेति 6, 27, 4. 8, 43, 5. 9, 13, 8. 21, 7. इमु त्यमथर्ववदग्निं मन्थति 6, 13, 7. इदम् त्यन्महिं म्कामनीकम् 4, 5, 9. त्यस्य so v. a. मम (vgl. अयं जनः) ÇAT. Br. 14, 4, 1, 26. ब्रह्म त्यदित्याचते jenes Unbekannte 6, 9, 10. सच्च त्यच्च so v. a. असच्च TAIT. Up. 2, 6. सच्च त्यं च (diese Form des nom. neutr. gewählt um sich nicht zu weit von सत्यम् oder सत्यम् zu entfernen, welches künstlich in सत् + त्यम् zerlegt wird) KAUSH. Up. in Ind. St. 1, 402. ÇAT. Br. 14, 3, 3, 1. In der späteren Sprache erscheint dies pron. nicht mehr; hier hat es sich nur als suff. in Formen wie तत्रत्य u. s. w. erhalten.

त्यक्तर (von त्यञ्) nom. ag. der da Jmd verlässt, im Stich lässt: कु-लपोषिताम् KULL. zu M. 3, 245. der Etwas hingiebt, aufopfert: त्यक्तरः संयुगे प्राणान् MBh. 7, 378.

त्यक्तव्य (wie eben) adj. zu verlassen, im Stich zu lassen, seinem Schicksal zu überlassen: ज्ञातिसंबन्धिभिस्त्वेते त्यक्तव्याः M. 9, 239. zu entfernen, fern zu halten: चतुष्पदाः स्वयूषेभ्यस्त्यक्तव्याः परभूमिषु VARĀH. BRH. S. 60, 7. hinzugeben, aufzuopfern BRĀHMAN. 3, 3. 15. ज्ञित्वाम् R. 2, 29, 5. — Vgl. त्याज्य.

त्यगल m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 238 (v. l. तिगल). त्यग्रापि Bez. eines Sāman: अर्घ्यप्रेषितस्त्यग्रापिरिति (एतत्साम) गा-येत् LĀTJ. 2, 12, 8. 2. 1, 6, 1. Schol.: = प्रथमं प्रवर्ग्यसाम.

1. त्यञ्, त्यञ्जति DĀTUP. 23, 17. तित्यञ्ज ved., तत्याञ् klass. P. 6, 1, 36; त्यदयति u. s. w. ohne Bindevocal Kār. 2 aus SIDDH. K. zu P. 7, 2, 10; (से) त्यञ्जिष्यामि DAÇ. 2, 53. (परि) त्यञ्जिष्ये MĀRK. P. 43, 68. अत्याज्ञोत्; in gebundener Rede auch med.; त्यक्तुम्: त्यक्त AK. 3, 2, 56. TRIK. 3, 1, 19. H. 1473. 1) Jmd verlassen, im Stich lassen, seinem Schicksal überlassen, seinen Weg gehen lassen, sich lossagen von, verstossen: यस्ति-त्याञ्जं सचिद्विद् सखीयं न तस्यं वाच्योपै भागो अस्ति RV. 10, 71, 6. देवा-स्त्यञ्जतु माम् N. 24, 30. BRĀHMAN. 3, 9. MBh. 3, 2329. (ताम्) अत्यञ्जत् — ज्ञो-णी त्वचमिवारगः 3, 5994. त्वं तु नस्त्यञ्ज गच्छसि HARIV. 4790. R. 1, 38, 11. इवृत्तमपि कः पुत्रं त्यञ्जेत् DAÇ. 2, 62. MBh. 2, 2611. तं तत्याज्ञाकृतिं पु-त्रम् R. 2, 36, 23. चतुर्वनिताभोग्यस्तं त्यञ्जति हि मन्त्रिणाः BHART. 1, 83. काञ्चित्त्वम् — शरणोपसृते सत्त्वं नात्यानीः BRĀG. P. 1, 14, 41. स्त्रियः कृतार्थाः पुरुषं निरर्थं निष्पीडिताल्लक्तकवत्यञ्जति PĀNĀT. 1, 209. मातापितृविकी-नो यस्त्यक्तः M. 9, 177. (तं प्रेतम्) अरण्ये काष्ठवत्यत्का 5, 69. शर्वज्ञं य-स्त्यञ्जेत्यायो याञ् चर्त्विक्त्यञ्जेदि 8, 388. 389. अथमानधमोस्त्यञ्जेत् 4,